

class - B.A. Part - I

Sub - Hindi (Hona) Paper - I

Written by Rameshwar Kumar

R.B.G.R. College Mahavijaypur

(1) भक्तिकाल की सांस्कृतिक स्थिति

उत्तर - सांस्कृतिक चेतना की सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति सार्वभौम सत्य के आधार पर पुलिसिय चार्मिक भावना और दार्शनिक चिंतन द्वारा के माध्यम से हुई है। कला, शिल्प, साहित्य और संगीत इन्हीं की आनुष्ठांगिक उपलब्धियाँ हैं। इन सब का क्षेत्र विशाल मानव समाज है, जिसकी प्रेरणा और प्रसाद से मनुष्य जीवन यापन करता है। भारतीय समाज में समय-समय पर विदेशी विजातीय तत्वों के आते रहने के कारण मानव संघात होते रहे हैं। परंतु इन्हीं से होकर ऐसी जीवनीशक्ति का संचार होता रहा है कि हम डूबते-डूबते भी उबरते चले आ रहे हैं। इन सब के मूल में हमारी समन्वय साधना की प्रवृत्ति उजागर रही है। वैदिक देवी-देवता के वाढ्य विधानों से बिक कर श्रमण संस्कृति के उन्मायकों ने जीवन का नया पथ खोज निकालने का यत्न किया, परंतु गुप्त साम्राज्य की स्थापना के अनंतर दोनों ही दृष्टमान हो गये। मौर्य साम्राज्य के विखराव के पश्चात् ब्राह्मणवाद का नये आज और तेज के साथ अभ्युत्थान हुआ।

परवर्ती गुप्तकाल में वैदिक युग
धर्म का पुनरुत्थान हुआ और देवी-
देवताओं तथा देवालयों की स्थापना
द्वारा लक्ष्मणः धर्म व्यवस्था को
पुनर्जीवित किया गया। उन दिनों
वैष्णव धर्म की को विशेष
उत्साह तथा प्रोत्साहन मिला।
ब्राह्मणों, श्रमणों तथा तत्त्वों से संबंधित
ब्राह्मणवाद को विद्वानों ने नव
ब्राह्मणवाद कहा जिसका स्वरूप वैदिक
परंपरा से विद्विन्न न होकर भी
भिन्न अवश्य था। सत्य तो यह है
कि ब्राह्मणवाद का भी अमिश्रित
रूप में पुनरुत्थान नहीं हुआ
था। दूसरों के अनेक मत-विश्वास
उसमें समाहित थे। मध्यकालीन हिंदू
जीवन घणाली पर उसका गहरा
प्रभाव पड़ा। पुराणकारों ने समन्वय-
साधना की प्रवृत्ति को पुनर्जीवित
किया परंपरा, वृद्धिभेद, रूचि वैविध्य,
देशकाल तथा तत्कालीन समाज से
प्रणा ग्रहण कर उन्होंने तदनुरूप
पूजा-उपासना तथा कर्मकांडीय पद्धतियों
को अपनाकर उनमें दार्शनिकता का
पुलक दे दिया। मुर्तिपूजा, तीथारोहण
अवतारवाद, गौ व ब्राह्मण रक्षा, धर्म-
शास्त्रों का सम्मान और कर्मकांड में
विश्वास पौराणिक धर्म की प्रमुख
विशेषताएँ थी, जिनमें लोक विश्वासों
का भी योगदान रहा। साधु-संन्या-
सियों का सम्मान तथा स्वर्ग-नरक
श्रद्धा-पिंडदान आदि इस युग की
अन्य उल्लेखनीय विशेषताएँ हैं।